INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HANDWRITTEN NOTES

HPSC -HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा हेतु

LATEST EDITION

भाग -5

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध + सांख्यिकीय विश्लेषण (DI)

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HPSC – HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 5

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध + सांख्यिकीय विश्लेषण (DI)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**HPSC-HCS (Haryana Public Service Commission – Haryana Civil Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**HPSC-HCS**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/wdvcfu

Online Order करें - https://bit.ly/40yVhHP

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	भारत की विदेश नीति • कौटिल्य का अर्थशास्त्र और भारतीय विदेश नीति • मध्यकालीन विदेश नीति • गुटनिरपेक्ष आंदोलन और भारत • नब्बे के दशक के बाद भारतीय विदेश नीति	1-4
2.	परमाणु नीति • भारत की परमाणु नीति • भारत का परमाणु कार्यक्रम • भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम • परमाणु अप्रसार संधि • नो फर्स्ट यूज़ नीति (No First Use Doctrine) की प्रासंगिकता • नो फर्स्ट यूज़ नीति के लाभ • भारत की नीति में परिवर्तन से जुड़े मुद्दे	4-7
3.	भारत और उसके पड़ोसी देशों • भारत-नेपाल संबंध ○ भारत-नेपाल मैत्री संधि ○ भारत-नेपाल व्यापार संबंध ○ भारत-नेपाल सैन्य संबंध ○ भारत-नेपाल संबंधों में हालिया घटनाएँ • भारत – श्रीलंका संबंध ○ भारत-श्रीलंका संबंध नवीनतम चिंताएं ○ भारत श्रीलंका मुद्दा - मछुआरों का मुद्दा ○ भारत श्रीलंका मुद्दा - श्रीलंकाई गृहयुद्ध में भारतीय हस्तक्षेप ○ भारत-श्रीलंका वाणिज्यिक संबंध ○ भारत-श्रीलंका (सुरक्षा सहयोग) भारत-भूटान संबंध	8-32

	○ भारत-भूटान वाणिज्यिक और सैन्य संबंध • भारत-म्यांमार संबंध ○ म्यांमार - भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है ○ म्यांमार में प्रमुख भारतीय परियोजनाएं ○ भारत और म्यांमार के बीच सहयोग ○ म्यांमार के सैन्य तख्तापलट का भारत पर प्रभाव • भारत-अफगानिस्तान संबंध ○ भारत-अफगान राजनीतिक संबंध ○ भारत और अफगानिस्तान के बीच आर्थिक संबंध ○ अफगानिस्तान में भारतीय प्रवासी ○ तालिबान के पुनः सत्ता अधिग्रहण के बाद भारत तालिबान सम्बन्ध • भारत-बांग्लादेश संबंध ○ आर्थिक संबंध ○ नदी जल का बँटवारा ○ कनेक्टिविटी / संपर्क ○ पर्यटन ○ भारत और बांग्लादेश के बीच वर्तमान प्रमुख मुद्दे • भारत चीन सम्बन्ध ○ भारत और चीन के बीच सीमा विवाद ○ जॉनसन लाइन बनाम मैकडॉनल्ड्स लाइन ○ 1962 का भारत-चीन युद्ध ○ युद्ध के बाद भारत-चीन सीमा पर संघर्ष ○ सीमा विवादों को सुलझाने के लिए समझौते और पहल ○ डोकलाम मामला ○ UNSC और NSG में भारत का प्रवेश ○ भारत का द्वारा OBOR का विरोध	

	○ भारत-अमेरिका संबंधों को मजबूत करना ○ तिब्बत और दलाई लामा का मुद्दा ○ मसूद अजहर का मुद्दा • भारत-पाकिस्तान संबंध ○ इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन ○ नेहरू - लियाक़त समझौता ○ सिंधु - नदी जल संधि 1960 ○ ताशकंद समझौता 1966 ○ पाकिस्तान में बदलता राजनीतिक परिदृश्य ○ पाकिस्तान की राजनीति और भारत-पाकिस्तान संबंधों पर प्रभाव ○ आतंकवाद और कश्मीर – कभी न खत्म होने वाले मुद्दे ○ कुलभूषण जाधव का मामला ○ भारत-पाकिस्तान संबंधों का भविष्य ○ भारत-पाकिस्तान संबंधः अतीत में की गई सकारात्मक पहल ○ भारत-पाकिस्तान संबंधों के बेहतर होने से होने वाले लाभ	
4.	भारत के अन्य देशों के साथ सम्बन्ध • भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध • भारत-कनाडा द्विपक्षीय संबंध • भारत-फ्रांस द्विपक्षीय संबंध • भारत-जर्मनी द्विपक्षीय संबंध • भारत-इटली द्विपक्षीय संबंध • भारत-इजरायल द्विपक्षीय संबंध • भारत-जापान द्विपक्षीय संबंध • भारत-रूस द्विपक्षीय संबंध • अंतर्राष्ट्रीय / बहुपक्षीय संगठन और संपर्क परियोजनाएं	33-90

	• रूस-चीन-पाकिस्तान के बीच त्रिपक्षीय संबंध और भारत पर इसका प्रभाव • भारत-ब्रिटेन द्विपक्षीय संबंध • भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंध • विकासशील देशों से बाहर भारत • भारत-मालदीव संबंध • इंडोनेशिया और भारत संबंध • भारत-ईरान संबंध • भारत-संयुक्त अरब अमीरात(यूएई) संबंध • भारत-सऊदी अरब संबंध • भारत-दक्षिण कोरिया संबंध • भारत-स्विट्जरलैंड संबंध	
5.	क्षेत्रीय और वैश्विक समूह ○ एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपेक) ○ सदस्य देश ○ बोगोर लक्ष्य ○ एपेक की उपलब्धियां ○ क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण और व्यापार को बढ़ावा देना: ○ स्वच्छ पर्यावरण के लिए पहल ○ समावेशी विकास ○ सहयोग और सहमति ○ मुद्दे और चुनौतियां ○ भारत और एपेक दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) ○ सदस्य देश ○ आसियान का विकास ○ आसियान समुदाय ○ लक्ष्य और उद्देश्य ○ भारत और आसियान	91-166

	○ आसियान-भारत कार्य योजना ○ 19वां आसियान-भारत शिखर सम्मेलन ○ समुद्री सुरक्षा सहयोग पर पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन सम्मेलन ○ आसियान और आरसीईपी BRICS ○ सदस्य देश ○ ब्रिक्स का विकास ○ सहयोग के क्षेत्र ○ लोगों से लोगों का आदान-प्रदान ○ राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग ○ संस्थागत सुधारों पर ब्रिक्स का प्रभाव ○ न्यू डेवलपमेंट बैंक ○ आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था ○ इंटरबैंक स्थानीय मुद्रा क्रेडिट लाइन समझौता ○ भारत के लिए महत्व ○ बहु-ध्रुवीय विश्व में ब्रिक्स की भूमिका बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल (बिम्सटेक) ○ सदस्य देश ○ स्थायी सचिवालय और अध्यक्षता ○ पिछला बिम्सटेक शिखर सम्मेलन ○ बिम्सटेक मुक्त व्यापार क्षेत्र ढांचा समझौता ○ बिम्सटेक के सिद्धांत ○ कलादान मल्टीमॉडल प्रोजेक्ट - भारत और म्यांमार को जोड़ता है ○ एशियाई त्रिपक्षीय राजमार्ग ○ बिम्सटेक आपदा प्रबंधन अभ्यास (बिम्सटेक-डीएमईएक्स) 2020 ○ भारत के लिए महत्व	

	G7 ○ पृष्ठभूमि ○ उद्देश्य ○ सदस्य ○ संरचना ○ शिखर सम्मेलन भागीदारी ○ शिखर सम्मेलन भागीदारी ○ शेरपा ○ G - 7 और एफएटीएफ ○ G-7 भारत ○ G-7 के विस्तार का प्रस्ताव ○ G-II योजना पर देशों की प्रतिक्रिया ○ G-II योजना का महत्वपूर्ण विश्लेषण ○ G7 समूह की आलोचना G-20 ○ पृष्ठभूमि ○ सदस्य ○ उद्देश्य ○ संरचना ○ वर्गीकरण ○ सहयोग ○ जी-20 का एजेंडा ○ 17वाँ G20 शिखर सम्मेलन – इंडोनेशिया ○ शिखर सम्मेलन के परिणाम ○ कोविड-19 से लड़ने में G-20 की भूमिका इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) ○ पृष्ठभूमि ○ सदस्य ○ संवाद भागीदार ○ उद्देश्य	

	○ प्राथमिकता वाले क्षेत्र ○ हिंद महासागर संवाद (IOD) ○ आईओआरए सतत विकास कार्यक्रम (आईएसडीपी) ○ आईएसडीपी उद्देश्य ○ चुनौतियां ○ विविध राज्य, विविध उद्देश्य ○ अतिव्यापी क्षेत्रीय संगठन ○ भू-राजनीतिक विवाद ○ 19वीं हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) मंत्रिपरिषद की बैठक ○ भारत और हिंद महासागर ○ भारत के लिए बाधाएं ○ IORA में भारत की भूमिका ○ सागर नीति ○ हिंद महासागर में हालिया घटनाक्रमः दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) ○ सार्क और साफ्टा ○ दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय ○ दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय मानक संगठन ○ दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार समझौता (साफ्टा) ○ सार्क और उसका महत्व ○ सार्क की उपलब्धियां ○ हालिया गतिविधि ○ भारत के लिए सार्क का महत्व ○ सार्क पर COVID-19 का प्रभाव ○ COVID-19 पर सार्क नेताओं का वीडियो सम्मेलन ○ सार्क की चुनौतियां ○ सार्क मुद्रा विनिमय व्यवस्था शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) ○ पृष्ठभूमि	

	○ सदस्य देश ○ लक्ष्य और उद्देश्य ○ संरचना ○ शंघाई स्पिरिटः द फंडामेंटल प्रिंसिपल्स 2019 का बिश्केक शिखर सम्मेलन ○ भारत के लिए महत्व ○ भारत के लिए एससीओ सदस्यता के सम्बन्ध में चुनौतियां ○ द्विपक्षीय तनाव से निपटने के लिए एससीओ का समझौता गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) ○ पृष्ठभूमि ○ सिद्धांत ○ मौजूदा स्थिति ○ भारत का स्टैंड ○ अंतरराष्ट्रीय सहयोगः आर्कटिक परिषद ○ संगठन संरचना ○ आर्कटिक परिषद कार्य समूह ○ तीन कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौता ○ आर्कटिक की विशेषताएँ और मुद्दे ○ भारत और आर्कटिक ○ वाणिज्यिक और सामरिक हित एशियाई बुनियादी ढांचा निवेश बैंक (एआईआईबी) ○ पृष्ठभूमि ○ एआईआईबी के विभिन्न अंग ○ अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल ○ एआईआईबी के वित्तीय संसाधन ○ एआईआईबी फाइनेंसिंग फ्रेमवर्क ○ भारत और एआईआईबी	

	○ भारत के लिए चिंता वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन ○ सीआईटीईएस परिशिष्ट का वर्गीकरण ○ CITES योगदान ○ CITES और भारत जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) ○ पृष्ठभूमि ○ उद्देश्य ○ संरचना ○ पार्टियों का सम्मेलन (सीओपी) ○ सीओपी अध्यक्ष और ब्यूरो ○ सहायक निकाय (एसबी) ○ सचिवालय ○ अन्य निकाय ○ पेरिस समझौता ○ भारत के प्रयास ○ पार्टियों का सम्मेलन 25 (COP25) ○ COP 27 ○ यूएनएफसीसीसी की सीमाएं जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCBD) ○ पृष्ठभूमि ○ भारत के 12 राष्ट्रीय जैव विविधता लक्ष्य न्यू डेवलपमेंट बैंक ○ पृष्ठभूमि ○ उद्देश्य ○ मूल्य ○ सदस्यता	

	○ COVID-19 संकट से निपटने के लिए भारत द्वारा उठाए गए उपाय इस्लामिक सहयोग संगठन (OIC) ○ पृष्ठभूमि ○ सदस्यता ○ उद्देश्य ○ प्राथमिकता वाले क्षेत्र ○ भारत और इस्लामी दुनिया ○ J&K पर OIC का रुख ○ भारत - OIC संबंध ○ OIC में भारत की सदस्यता के पक्ष में तर्क ○ OIC में भारत के सामने चुनौतियां: दक्षिण एशिया सहकारी पर्यावरण कार्यक्रम (एसएसीईपी) ○ पृष्ठभूमि ○ उद्देश्य ○ शासी संरचना ○ दृष्टि ○ मिशन ○ भारत और SACEP भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) ○ पृष्ठभूमि ○ उद्देश्य ○ सिद्धांत ○ संरचना ○ आईबीएसए शिखर सम्मेलन ○ आईबीएसए की पहल ○ आईबीएसए देशों का सहयोग ○ भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) संवाद मंच	

	○ विकास सहयोग के लिए आईबीएसए तंत्र - गरीबी और भूख के उपशमन के लिए आईबीएसए कोष ○ ब्रिक्स की तुलना में आईबीएसए की प्रासंगिकता यूरोपीय संघ ○ पृष्ठभूमि ○ लक्ष्य ○ मूल्य ○ इतिहास ○ यूरोपीय संसद ○ यूरोपीय संघ की परिषद ○ यूरोपीय आयोग (ईसी) ○ लेखा परीक्षकों के यूरोपीय न्यायालय (ईसीए) ○ यूरोपीय संघ के न्याय न्यायालय (सीजेईयू) यूरोपीय सेंट्रल बैंक (ईसीबी) ○ कार्य ○ चुनौतियां और सुधार ○ Brexit ○ ब्रेक्सिट और भारत ○ यूरोपीय संघ और भारत यूरेशियन आर्थिक संघ ○ यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) – परिचय ○ यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) - विभिन्न निकाय ○ यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) - 5 सदस्य राज्यों की सूची ○ यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) - अर्थव्यवस्था ○ यूरेशियन आर्थिक संघ - आर्थिक भागीदार ○ यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) - पूर्वी एशिया के साथ व्यापार ○ यूरेशियन आर्थिक संघ (EAEU) - मुक्त व्यापार समझौता	

	○ यूरेशियन आर्थिक आयोग ○ यूरेशियन आर्थिक संघ का न्यायालय राष्ट्रमंडल ○ पृष्ठभूमि ○ राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों की बैठक ○ राष्ट्रमंडल सचिवालय ○ राष्ट्रमंडल मानवाधिकार पहल (सीएचआरआई) ○ महासागर शासन पर ब्लू चार्टर ○ राष्ट्रमंडल साइबर घोषणा ○ राष्ट्रमंडल नवाचार सूचकांक ○ कॉमनवेल्थ इनोवेशन फंड ○ भारत और राष्ट्रमंडल ○ राष्ट्रमंडल के साथ मुद्दे ○ राष्ट्रमंडल का महत्व ○ मालदीव फिर से राष्ट्रमंडल में शामिल हुआ	
1.	सांख्यिकीय विश्लेषण, आरेख और रेखांकन ○ आँकड़ों का विश्लेषण (Data Interpretation) ○ Bar Graph (दण्ड आरेख) :- ○ रेखा चित्र(line graph) ○ PIE CHARTS ○ Mixed DI ○ Airthmetic DI ○ साझेदारी(Partnership) ○ Caselete DI	166-200

अध्याय – I

भारत की विदेश नीति

कौटिल्य का अर्थशास्त्र और भारतीय विदेश नीति

- मण्डल सिद्धान्त- कौटिल्य ने अपने मण्डल सिद्धांत में विभिन्न राज्यों द्वारा दूसरे राज्यों के प्रति अपनाई गई नीति का वर्णन किया। प्राचीनकाल में भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व था। शक्तिशाली राजा युद्ध द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार करते थे। राज्य कई बार सुरक्षा की दृष्टि से अन्य राज्यों से समझौता भी करते थे। कौटिल्य के अनुसार युद्ध व विजय द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार करने वाले राजा को अपने शत्रुओं की अपेक्षा मित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए, ताकि शत्रुओं पर नियंत्रण रखा जा सके। दूसरी ओर निर्बल राज्यों को शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों से सतर्क रहना चाहिए। उन्हें समान स्तर वाले राज्यों के साथ मिलकर शक्तिशाली राज्यों की विस्तारनीति से बचने हेतु एक गुट या मण्डल बनाना चाहिए।

छः सूत्रीय विदेश नीति- कौटिल्य ने विदेश सम्बन्धों के संचालन हेतु छः प्रकार की नीतियों का विवरण दिया है-

- **संधि**- शान्ति बनाए रखने हेतु समतुल्य या अधिक शक्तिशाली राजा के साथ संधि की जा सकती है। आत्मरक्षा की दृष्टि से शत्रु से भी संधि की जा सकती है। किन्तु इसका लक्ष्य शत्रु को कालान्तर में निर्बल बनाना है।
- **विग्रह**- विग्रह या शत्रु के विरुद्ध युद्ध का के निर्माण।
- **यान**- युद्ध घोषित किए बिना आक्रमण की तैयारी।
- **आसन**- तटस्थता की नीति।
- **संश्रय**- आत्मरक्षा की दृष्टि से राजा द्वारा अन्य राजा की शरण में जाना।
- **द्वैधीभाव**- एक राजा के साथ शान्ति संधि करके दूसरे के साथ युद्ध करने की नीति।

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मध्यकालीन विदेश नीति

- पश्चिमी तट पर भारत के दक्षिण के राज्यों ने अफ्रीका में अरब सागर के किनारे और हिंद महासागर के तटवर्ती राज्यों के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- पूर्वी-तट और दक्षिण के राज्यों ने सीलोन, बर्मा, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलाया के साथ संबंध बनाए रखा।
- भारत में स्थित अफगान और तुर्की शासकों ने मध्य एशिया, फारस, अरब दुनिया, एशिया माइनर, ग्रीस, लेवेंट, तिब्बत और चीन के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- मुगलों ने पड़ोसियों और पुर्तगाली, फ्रेंच, ब्रिटिश आदि के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।
- अकबर के समय में, भारत: सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, आर्थिक कूटनीति का भागीदार था।
- भारतीय पदचिह्न बढ़ाने के लिए अपनाई गई थीम- कठिन कूटनीति: लड़ाइयों के माध्यम से समेकित और नया क्षेत्र हासिल किया।
- उत्तरी भारत: मुगलों, अरबों, तुर्कों आदि ने भारत में धन प्राप्त करने और भारत में नए राज्यों को मजबूत करने के लिए भारत पर आक्रमण किया।
- दक्षिणी भारत: चोल, चेर, पाण्डेय आदि ने अपनी कूटनीतिक उन्नति के लिए मजबूत सेना और नौसेना का इस्तेमाल किया।
- सॉफ्ट डिप्लोमेसी: संबंधों को मजबूत करने के लिए राजाओं द्वारा भेजे गए राजदूत + व्यापार।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन और भारत

ब्रिटिश काल की विदेश नीति

- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति ने नए समुद्री और व्यापार मार्गों की खोज की।
- कैप्टन हॉकिन्स और सर थॉमस रो भारत में व्यापार के लिए सम्राट जहांगीर के दरबार में आए।
- भारत की खोज 1498 में वास्को डी गामा नामक पुर्तगाली ने की थी।
- अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगाली और डच व्यापार के लिए भारत आए।
- भारत में गढ़वाले कारखानों और भारत को अपना उपनिवेश बना लिया।
- भारत से ब्रिटेन को कच्चे माल का निर्यात। तैयार माल का आयात (ब्रिटेन से भारत)।
- ईस्ट इंडियन एसोसिएशन, वैंकूवर में स्वदेश सेवक होम, सिएटल में यूनाइटेड इंडिया हाउस ने ब्रिटिश भारत के खिलाफ कूटनीति को मजबूत करने के लिए भारतीय राष्ट्रवादी बनाया।
- राजा महेंद्र प्रताप सिंह द्वारा काबुल में भारत की एक अस्थायी सरकार की स्थापना।
- 1927 के बाद, कांग्रेस द्वारा जारी पहली विदेश नीति का मसौदा तैयार करने में नेहरू की सक्रिय भूमिका थी।
- ब्रिटिश आक्रमण ने अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ जुड़ाव को जन्म दिया।
- एस.सी. बोस की कूटनीतिक नीति ने जापान को अंग्रेजों के खिलाफ भारत की मदद करने के लिए मजबूर किया।
- भारत ने 1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में भाग लिया।
- अंतरिम सरकार ने संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, यूएसएसआर आदि के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखा।

- *भारत, गुटनिरपेक्ष आंदोलन का एक प्रमुख देश है अतः इस आंदोलन की स्थापना के बाद से ही भारत इसके सिद्धांतों का पालन करता आया है। हालाँकि कुछ देशों ने भारत के परमाणु परीक्षण और सोवियत संघ से आपसी मित्रता संधि को लेकर सवाल खड़े किये थे।*
- *गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना के बाद से इसके शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री भाग लेते आ रहे थे। किन्तु वर्ष 2016 और 2018 में भारतीय प्रधानमंत्री ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (नैम) के शिखर सम्मेलन में भाग नहीं लिया तो ऐसा माना जाने लगा कि शायद भारत के लिए नैम का महत्त्व कम हो गया है।*
- *हालाँकि कोविड-19 महामारी के दरम्यान नैम के मई, 2020 में आयोजित आभासी शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री ने भाग लिया था।*
- ***नब्बे के दशक के बाद भारतीय विदेश नीति (गुटनिरपेक्ष आंदोलन से विचलन)***
- *नब्बे के दशक में जब गुटनिरपेक्ष आंदोलन (नैम) कमजोर पड़ा तो भारतीय विदेश नीति में इस आंदोलन का महत्त्व भी कम हो गया अर्थात् अब यह भारत की विदेश नीति का प्रमुख तत्त्व नहीं रह गया।*
- *इसके, बाद सरकार ने मल्टी अलायमेंट (Multi-alignment) पर जोर दिया अर्थात् भारत अपने हितों के मुताबिक कई संगठनों में शामिल होने लगा। लेकिन इससे भारत की छवि एक अवसरवादी देश के रूप में रूपान्तरित होने का खतरा व्याप्त हो गया।*
- *मल्टी अलायमेंट के बाद 'मुद्दा आधारित साझेदारी या गठबंधन' (issue based partnership or coalition) पर जोर दिया गया। लेकिन भारत की विदेश नीति का यह तत्त्व भी धीरे-धीरे ठण्डे बस्ते में चला गया।*

पंचशील

- *औपचारिक रूप से व्यापार और संभोग पर समझौता b/w तिब्बत और भारत में प्रतिपादित।*
- *29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षरित। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रमुख केंद्र के रूप में अपनाया गया।*
- *पंचशील सिद्धांत :-*

भारत-फ्रांस द्विपक्षीय संबंध

पृष्ठभूमि

- *फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में एक स्थायी सीट, अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लिए गए निर्णयों में बेहतर भागीदारी (जैसे विस्तारित G8 और G20), असैन्य परमाणु सहयोग तक पहुंच और कई रणनीतिक मामलों में भारत के अनुरोधों का दृढ़ता से समर्थन किया।*
- *रक्षा और सुरक्षा सहयोग, अंतरिक्ष सहयोग और असैन्य परमाणु सहयोग के क्षेत्र फ्रांस के साथ हमारी सामरिक साझेदारी के प्रमुख स्तंभ हैं।*
- *जीवंत द्विपक्षीय सांस्कृतिक और शैक्षिक संबंध मौजूद हैं और साथ ही लोगों से लोगों के बीच संपर्क भी बढ़ रहा है। भारतीय डायस्पोरा की फ्रांस और उसके विदेशी क्षेत्रों में भी बड़ी उपस्थिति है।*

सहयोग के क्षेत्र

राजनीतिक

- *भारत और फ्रांस के बीच राजनीतिक सहयोग की शुरुआत 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद दिल्ली पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों को सीमित करने में भारत के लिए फ्रांस के समर्थन से हुई थी।*
- *आज फ्रांस आतंकवाद और कश्मीर से संबंधित मुद्दों पर भारत के सबसे विश्वसनीय भागीदार के रूप में उभरा है; इसे आगे ले जाना अब महत्वपूर्ण होगा।*

द्विपक्षीय व्यापार

- *फ्रांस भारत के लिए एफडीआई के एक प्रमुख स्रोत के रूप में उभरा है, जिसमें 1,000 से अधिक फ्रांसीसी प्रतिष्ठान पहले से ही भारत में मौजूद हैं,*

जिनका कुल कारोबार 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर है और लगभग 300,000 व्यक्ति कार्यरत हैं।

- फ्रांस में (उप-सहायक कंपनियों सहित) 150 से अधिक भारतीय कंपनियां कार्यरत हैं, जिनमें 7,000 से अधिक व्यक्ति कार्यरत हैं।
- दोनों देशों ने अतिरिक्त तरीकों और तंत्रों सहित, फ्रांसीसी और भारतीय दोनों कंपनियों के लिए व्यापार और निवेश के मुद्दों को हल करने के लिए संयुक्त रूप से काम को और मजबूत करने का निर्णय लिया।

रक्षा सहयोग

- भारत और फ्रांस अपने सशस्त्र बलों के बीच सहयोग को और मजबूत करने के लिए दृढ़ हैं और इस संबंध में संयुक्त बलों के सहयोग को विकसित करने के लिए विचार-विमर्श करने के साथ-साथ अंतर-संचालन बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं।
- उन्होंने पारस्परिक रसद सहायता के प्रावधान के संबंध में एक समझौते पर हस्ताक्षर करने का स्वागत किया।
- रक्षा औद्योगिक सहयोग भारत और फ्रांस के बीच रणनीतिक साझेदारी के मुख्य आधारों में से एक रहा है।
- दोनों देशों की रक्षा कंपनियों के बीच **"मेक इन इंडिया" की भावना** और दोनों देशों के पारस्परिक लाभ के लिए मौजूदा और आगामी साझेदारी के लिए अपना समर्थन बढ़ाया।

प्रमुख रक्षा-संबंधित परियोजनाएं

राफेल विमान की खरीद

- 23 सितंबर 2016 को नई दिल्ली में रक्षा मंत्री मनोहर परिकर और फ्रांस के रक्षा मंत्री ले ड्रियन द्वारा फ्लाईअवे स्थिति में भारत द्वारा 36 राफेल जेट खरीदने के लिए अंतर-सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए ।

P-75 स्कॉर्पीन परियोजना

- मैसर्स डीसीएनएस से छह स्कॉर्पीन पनडुब्बियों के अनुबंध पर अक्टूबर 2006 में हस्ताक्षर किए गए थे।
- सभी छह जहाजों को मझगांव डॉक्स लिमिटेड में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के तहत बनाया जाना है। परियोजना का कार्यान्वयन चल रहा है। पहली पनडुब्बी आईएनएस कलवरी को अक्टूबर 2017 में कमीशन किया गया था।

अंतरिक्ष सहयोग

- दोनों देशों ने भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों के लिए चिकित्सा सहायता कर्मियों को प्रशिक्षित करने के निर्णय का स्वागत किया, जो 2022 तक भारत के मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन का हिस्सा होंगे। प्रशिक्षण फ्रांस और भारत दोनों में किया जाएगा।
- नेताओं ने संयुक्त समुद्री डोमेन जागरूकता मिशन की प्राप्ति के लिए एक रूपरेखा की स्थापना के लिए एक कार्यान्वयन व्यवस्था पर हस्ताक्षर करने का भी निर्णय किया। उन्होंने अंतरिक्ष जलवायु वेधशाला के शुभारंभ का भी स्वागत किया।
- दोनों देशों ने अंतरिक्ष मिशनों की सुरक्षा की गारंटी के लिए आवश्यक मानदंडों और सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ कार्य करने का भी संकल्प लिया।

डिजिटल स्पेस

- दोनों नेताओं ने भारत-फ्रांस द्विपक्षीय सहयोग का विस्तार, विशेष रूप से उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के रणनीतिक क्षेत्रों में, करने के उद्देश्य से एक साइबर सुरक्षा और डिजिटल प्रौद्योगिकी रोड मैप को अपनाया।

- हाल ही में एक यात्रा में, क्वांटम कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एक्सास्केल सुपरकंप्यूटिंग के क्षेत्र में सहयोग विकसित करने के लिए सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग और एटोस (फ्रांस स्थित आईटी कंपनी) के बीच एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।

ऊर्जा

- महाराष्ट्र के जैतपुर में भारत में छह परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों के निर्माण के लिए 2018 में दोनों पक्षों के बीच औद्योगिक मार्ग आगे बढ़ने के समझौते के समापन के बाद से एनपीसीआईएल और ईडीएफ के बीच वार्ता में प्रगति।
- नेताओं ने यह भी नोट किया कि तकनीकी-वाणिज्यिक प्रस्ताव और परियोजना के वित्तपोषण के साथ-साथ भारत में विनिर्माण के माध्यम से स्थानीयकरण कैसे बढ़ाया जाए और दोनों पक्षों के बीच सीएलएनडी अधिनियम पर आम समझ बढ़ाने पर चर्चा चल रही है।

असैन्य परमाणु सहयोग

- तत्कालीन प्रधान मंत्री की फ्रांस यात्रा के दौरान 30 सितंबर 2008 को भारत और फ्रांस के बीच असैन्य परमाणु सहयोग पर एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसके बाद, दिसंबर 2010 में तत्कालीन फ्रांसीसी राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी की भारत यात्रा के दौरान, जैतपुर परमाणु ऊर्जा परियोजना (जेएनपीपी) के लिए ईपीआर के कार्यान्वयन के लिए एनपीसीआईएल और मेसर्स अरेवा के बीच सामान्य रूपरेखा समझौते और प्रारंभिक कार्य समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- ईडीएफ और एनपीसीआईएल ने जैतपुर में प्रत्येक 1650 मेगावाट की छह ईपीआर इकाइयों के निर्माण के लिए 22 मार्च 2016 को एक संशोधित समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

आतंक

- दोनों नेताओं ने सीमा पार आतंकवाद और फ्रांस और भारत में आतंकवाद से संबंधित घटनाओं सहित सभी रूपों और अभिव्यक्तियों में आतंकवाद की अपनी कड़ी निंदा दोहराई।
- दोनों नेताओं ने फिर से पुष्टि की कि आतंकवाद को किसी भी आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता है और इसे किसी भी धर्म, पंथ, राष्ट्रीयता और जातीयता से नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

हिंद महासागर क्षेत्र

- भारत और फ्रांस ने मार्च 2018 में राष्ट्रपति मैक्रों की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान अपनाए गए हिंद महासागर क्षेत्र में भारत-फ्रांस सहयोग के संयुक्त रणनीतिक दृष्टिकोण के निष्कर्ष के त्वरित कार्यान्वयन का स्वागत किया।
- व्हाइट शिपिंग समझौते के कार्यान्वयन के लिए, भारत और फ्रांस गुरुग्राम में सूचना संलयन केंद्र - हिंद महासागर क्षेत्र (IFC-IOR) में एक फ्रांसीसी संपर्क अधिकारी की नियुक्ति।
- दोनों राष्ट्र आगे हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए) में अपनी कार्रवाई का समन्वय करने का इरादा रखते हैं और इच्छुक राज्यों के साथ, दक्षिणी हिंद महासागर में समुद्री डकैती और सभी प्रकार की समुद्री तस्करी से निपटने के लिए संपत्ति को मजबूत करने के लिए एक संयुक्त परियोजना शुरू की।
- म्युचुअल लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट, जो भारतीय नौसैनिक युद्धपोतों को ईंधन भरने के लिए जिबूती में फ्रांसीसी नौसैनिक अड्डे तक पहुंच प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, 1987 में स्थापित नई दिल्ली में स्थित उन्नत अनुसंधान के संवर्धन के लिए भारत-फ्रांसीसी केंद्र (सीईएफआईपीआरए) विज्ञान में अनुसंधान के लिए संयुक्त प्रस्तावों के वित्तपोषण और मौजूदा अनुसंधान परियोजनाओं के मूल्यांकन में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है।
- कई अन्य द्विपक्षीय सहयोग कार्यक्रम मौजूद हैं, जिसमें 2016 में स्थापित विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर भारत-फ्रांसीसी मंत्रिस्तरीय संयुक्त समिति शामिल है।
- फ्रांसीसी अंतरिक्ष एजेंसी सीएनईएस ने 2022 तक मानव अंतरिक्ष उड़ान - (गगनयान) के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और बायोएस्ट्रोनॉटिक्स के लिए इसरो के साथ एक समझौता किया।
- फ्रांसीसी उच्च शिक्षा संस्थानों में, विशेष रूप से व्यवसाय प्रबंधन के क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यम में

पाठ्यक्रमों की पेशकश से उत्साहित होकर, लगभग 3,000 नए भारतीय छात्र हर साल फ्रांस आते हैं।

सांस्कृतिक सहयोग

- विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र नाम का एक भारतीय सांस्कृतिक केंद्र पेरिस में खोला जा रहा है।
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2016 से पेरिस और फ्रांस के अन्य शहरों में भारत के दूतावास द्वारा आयोजित किया गया।
- महात्मा गांधी की 150वीं जयंती, श्री गुरुनानक देवजी की 550वीं जयंती और भारत के संविधान के 70वें वर्ष के उपलक्ष्य में भी सालाना समारोह का आयोजन किया गया है।
- शुरू में 2016 से 2018 की अवधि के लिए एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम जारी है ।
- भारत सरकार ने फ्रांसीसी नागरिकों को भारत में संस्कृत के अध्ययन के लिए पांच छात्रवृत्तियां भी प्रदान की हैं।

भारतीय डायस्पोरा

- यह अनुमान है कि मुख्य भूमि फ्रांस में अनिवासी भार भारतीय समुदाय की संख्या लगभग 109, 000 है, पुडुचेरी, कराईकल, यनम, माहे और चंद्रनगर के फ्रांसी उत्पन्न हुई है।
- भारतीय मूल की आबादी की एक बड़ी संख्या रीयूनिय (280,000), गुआदेलूप (60,000), मार्टीनिक (6, मार्टिन (300) के फ्रांसीसी प्रवासी क्षेत्रों में रहती है।
- फ्रांस में 50 से अधिक भारतीय सामुदायिक संगठन स मूल की आबादी वाले प्रमुख समुदायों की उत्पत्ति पुडुचे तमिलनाडु, गुजरात और पंजाब से हुई है।
- दोनों पक्षों ने एक प्रवासन और गतिशीलता भागीदारी हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य गतिशीलता के आधार परिपत्र प्रवास को सुविधाजनक बनाना और स्वदेश में के लिए प्रोत्साहन देना है।

बैश्विक एजेंडा

- जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, नवीकरणीय ऊर्जा, आतंकवाद, साइबर सुरक्षा और डिजिटल प्रौद्योगिकी, आदि के लिए और सौर गठबंधन विकसित करने के लिए संयुक्त प्रयास किए गए हैं
- दोनों देश साइबर सुरक्षा और डिजिटल प्रौद्योगिकी पर एक रोड मैप पर सहमत हुए हैं।

भारत-प्रशांत में फ्रांसीसी उपस्थिति

- हिंद महासागर में रीयूनियन और मायोटे (मोज़ाम्बिक चैनल) के द्वीप और दक्षिण प्रशांत में न्यू कैलेडोनिया और फ्रेंच पोलिनेशिया।
- फ्रांस में दुनिया का सबसे बड़ा ईईजेड (11 मिलियन वर्ग किमी) है - जिसमें से 62% प्रशांत क्षेत्र में और 24% हिंद महासागर में है।
- जिबूती और अबू धाबी में सैन्य उपस्थिति।

UNSC सुधार: फ्रांस भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन करता है

- भारत और फ्रांस संयुक्त रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार का आह्वान करते हैं जिससे भारत को इसमें स्थायी सीट हासिल करने में मदद मिलेगी।
- उन्होंने जून 2020 में 12वें मंत्रिस्तरीय सम्मेलन की अगुवाई सहित विश्व व्यापार संगठन के आधुनिकीकरण की दिशा में एक साथ और दूसरों के साथ तेजी से और रचनात्मक रूप से काम करने की अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की।
- इसके अलावा, दोनों देशों ने रणनीतिक और बहुपक्षीय मुद्दों के साथ-साथ व्यापार, निवेश और नवाचार में यूरोपीय संघ और भारत के बीच संबंधों को गहरा करने के अपने दृढ़ संकल्प की पुष्टि की।

चुनौतियाँ

- भारत-फ्रांस नौसैनिक सहयोग का उद्देश्य महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करना, समुद्री डकैती, अंतरराष्ट्रीय अपराध और आतंकवाद के सुरक्षा खतरों से प्रभावी ढंग से निपटने की आवश्यकता और हिंद महासागर में सुरक्षा क्षमताओं का निर्माण करना है।
- फ्रांसीसी कंपनियां, जैसे कि डसॉल्ट एविएशन आदि बेहद प्रतिस्पर्धी हैं और देश के रक्षा उद्योग के पास भारत के रक्षा बाजार को नेविगेट करने में विशेष विशेषज्ञता रखने वाली फर्मों के साथ उत्पादन और आपूर्ति का एक विश्वसनीय रिकॉर्ड है, उदाहरण के लिए राफेल विमान और स्कॉर्पीन क्लास सबमरीन के अनुबंध (प्रोजेक्ट- 75)।

जोहान्सबर्ग घोषणा:

- **चौथी औद्योगिक क्रांति का महत्व:** यह नई औद्योगिक क्रांति (पार्टएनआईआर) पर ब्रिक्स साझेदारी की स्थापना की सिफारिश करता है।
- **'अफ्रीका तक ब्रिक्स की पहुंच' और 'ब्रिक्स प्लस' प्रारूप:** 2017 में ज़ियामेन शिखर सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों के कुछ देशों को आमंत्रित करके शुरू किए गए ब्रिक्स प्लस प्रारूप को जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन में भी आगे बढ़ाया गया था।

भारत के लिए महत्व

- भारत आपसी हितों के आर्थिक मुद्दों पर परामर्श और सहयोग के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, वैश्विक शासन संस्थानों के सुधार आदि जैसे सामयिक वैश्विक मुद्दों पर ब्रिक्स की सामूहिक ताकत से लाभान्वित हो सकता है।
- भारत अपनी एनएसजी सदस्यता पर अन्य ब्रिक्स देशों के साथ जुड़ा हुआ है।
- यह अधिक सौदेबाजी की जगह प्रदान करता है क्योंकि भारत वैश्विक शासन के संस्थानों में अधिक प्रमुखता हासिल करना चाहता है, और उन्हें उदार अंतरराष्ट्रीय परंपरा में एक दक्षिणी लोकाचार के साथ आकार देना चाहता है।
- NDB भारत को उनके बुनियादी ढांचे और सतत विकास परियोजनाओं के लिए संसाधन जुटाने और उनका लाभ उठाने में मदद करेगा। एनडीबी ने ऋणों के अपने पहले सेट को मंजूरी दे दी है, जिसमें अक्षय ऊर्जा वित्तपोषण योजना के लिए मल्टीट्रेंच फाइनेंसिंग सुविधा के लिए भारत के संबंध में यूएस $ 250 मिलियन का ऋण शामिल है।

बहु-ध्रुवीय विश्व में ब्रिक्स की भूमिका

- समकालीन वास्तविकताओं का जवाब देने के लिए ब्रिक्स को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष में वजन हासिल करने की जरूरत है। इसमें सभी हितधारकों की भागीदारी की आवश्यकता है
- आर्थिक-वित्तीय क्षेत्र ब्रिक्स के लिए गतिविधि के सबसे आशाजनक क्षेत्रों में से एक है।
- उच्च विकास दर, आर्थिक क्षमता और जनसांख्यिकीय विकास ब्रिक्स को वैश्विक एजेंडा निर्धारित करने और वैश्विक शासन में अधिक से अधिक कहने में अग्रणी स्थिति में डाल रहे हैं।
- इसके अलावा, एक समूह के रूप में ब्रिक्स से अपनी भूमिका बढ़ाने और आतंकवाद, समुद्री डकैती और परमाणु अप्रसार से लेकर उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व में क्षेत्रीय सुरक्षा तक, शांति और सुरक्षा चुनौतियों का विस्तार करने की उम्मीद की जाती है।
- जलवायु परिवर्तन के क्षेत्रों में ब्रिक्स एक समूह के रूप में आम सहमत सिद्धांतों पर काम करता है।
- दुनिया के 40% लोगों की आवाज सुनना समानता की ओर एक कदम है।

जोहान्सबर्ग घोषणा

- **चौथी औद्योगिक क्रांति का महत्व:** यह नई औद्योगिक क्रांति पर ब्रिक्स साझेदारी की स्थापना की सिफारिश करता है।
- **'अफ्रीका तक ब्रिक्स की पहुंच' और 'ब्रिक्स प्लस' प्रारूप:** 2017 में ज़ियामेन शिखर सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों के कुछ देशों को आमंत्रित करके शुरू किए गए ब्रिक्स प्लस प्रारूप का जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन में भी अनुकरण किया गया था।

15वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन

- हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री ने 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया, जिसकी वर्चुअली मेज़बानी चीन द्वारा की गई थी।
- 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का विषय है: उच्च गुणवत्ता वाली ब्रिक्स साझेदारी को बढ़ावा देना, वैश्विक विकास के लिये एक नए युग की शुरुआत करना।
- संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, मिस्र, कज़ाखस्तान, इंडोनेशिया, अर्जेंटीना, नाइजीरिया, सेनेगल और थाईलैंड सहित देशों के मंत्रियों के साथ मुख्य बैठक के हिस्से के रूप में ब्रिक्स प्लस आभासी सम्मेलन भी आयोजित किया गया था।

- **बीजिंग घोषणा:**
  - इसमें कहा गया है कि ब्रिक्स (BRICS) रूस और यूक्रेन के बीच वार्ता का समर्थन करता है।
  - यह समूह यूक्रेन को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिये संयुक्त राष्ट्र एवं रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति (ICRC) के प्रयासों का समर्थन करने को तैयार है।
  - देशों ने तालिबान द्वारा नियंत्रित अफगानिस्तान की स्थिति के बारे में भी चिंता व्यक्त की।

चुनौतियां

- दुनिया भर में बड़े उभरते बाजारों का सच्चा प्रतिनिधि बनने के लिए, ब्रिक्स को पैन-कॉन्टिनेंटल बनना होगा। इसकी सदस्यता में अन्य क्षेत्रों और महाद्वीपों के अधिक देश शामिल होने चाहिए।
- ब्रिक्स को वैश्विक व्यवस्था में अपनी प्रासंगिकता बढ़ाने के लिए अपने एजेंडे का विस्तार करने की आवश्यकता होगी। अभी तक, जलवायु परिवर्तन और विकास वित्त, जिसका उद्देश्य बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है, एजेंडे पर हावी है।
- जैसे-जैसे ब्रिक्स आगे बढ़ता है, ब्रिक्स के मूलभूत सिद्धांत यानी वैश्विक शासन में संप्रभु समानता और बहुलवाद के लिए सम्मान का परीक्षण किया जा सकता है क्योंकि पांच सदस्य देश अपने स्वयं के राष्ट्रीय एजेंडा को आगे बढ़ाते हैं।
- डोकलाम पठार और लद्दाख पर भारत और चीन के बीच सैन्य गतिरोध, जिसने इस भोली धारणा को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया है कि ब्रिक्स सदस्यों के बीच एक आरामदायक राजनीतिक संबंध हमेशा संभव है।
- राष्ट्र राज्यों को सहयोजित करने के चीन के प्रयास, जो उसके बेल्ट एंड रोड पहल के अभिन्न अंग हैं, एक व्यापक राजनीतिक व्यवस्था में ब्रिक्स सदस्यों, विशेष रूप से चीन और भारत के बीच संघर्ष का कारण बनने की क्षमता है।

आगे की राह

- ब्रिक्स को सभी बड़े और छोटे राज्यों के व्यापक विकास को बढ़ावा देना चाहिए और साझा हितों के आधार पर उनके बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग बढ़ाना चाहिए।
- एक नागरिक समाज संवाद की बहुत जरूरत है।
- ब्रिक्स देशों को दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में संकट और संघर्ष के शांतिपूर्ण और राजनीतिक-राजनयिक समाधान के लिए प्रयास करना चाहिए।
- ब्रिक्स, उभरती हुई निष्पक्ष बहुकेंद्रित विश्व व्यवस्था के स्तंभों में से एक होने के नाते, वैश्विक मामलों में एक महत्वपूर्ण स्थिर भूमिका निभाता है।
- वैश्विक एजेंडा पर अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के समझौतों का लोकतंत्रीकरण सभी हितधारकों की व्यापक और समान भागीदारी के साथ किया जाना चाहिए और सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त कानूनी मानदंडों पर आधारित होना चाहिए।
- विश्व की सांस्कृतिक और सभ्यतागत विविधता के सम्मान के सिद्धांत को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- विश्व राजनीति के तूफानी महासागर में ब्रिक्स अंतरराष्ट्रीय स्थिरता बनाए रखने और वैश्विक आर्थिक विकास सुनिश्चित करने और बहुध्रुवीय दुनिया का एक संयुक्त केंद्र बनने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल (बिम्सटेक)

पृष्ठभूमि

- बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) की स्थापना 1997 में ढाका में एक सचिवालय के साथ बैंकाक घोषणा में की गई थी।
- इसके सदस्य बंगाल की खाड़ी के तटवर्ती और निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं, जो एक सन्निहित क्षेत्रीय एकता का निर्माण करते हैं।
- बिम्सटेक न केवल दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ता है, बल्कि महान हिमालय और बंगाल की खाड़ी की पारिस्थितिकी को भी जोड़ता है।
- इसका मुख्य उद्देश्य तीव्र आर्थिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है; सामाजिक प्रगति में तेजी लाना; और इस क्षेत्र में साझा हित के मामलों पर सहयोग को बढ़ावा देना।

सदस्य देश

- बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, नेपाल और भूटान (मालदीव, अफगानिस्तान, पाकिस्तान नहीं)
- बिम्सटेक देशों की आबादी लगभग 1.5 बिलियन है, जो वैश्विक आबादी का लगभग 21% है, जिसकी कुल जीडीपी 2.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है। वार्षिक जीडीपी विकास दर औसतन लगभग 6% रही है।

स्थायी सचिवालय और अध्यक्षता

- बिम्सटेक स्थायी सचिवालय ढाका 2014 में खोला गया था और भारत अपने व्यय का 33% योगदान देता है।
- बिम्सटेक के वर्तमान महासचिव बांग्लादेश से राजदूत मोहम्मद शाहिदुल इस्लाम हैं और पूर्व महासचिव श्रीलंका से सुमित नकंदला थे।

संस्थागत तंत्र

- **बिम्सटेक शिखर सम्मेलन** -बिम्सटेक प्रक्रिया में सर्वोच्च नीति बनाने वाला निकाय है और सदस्य राज्यों के राष्ट्राध्यक्षों/सरकार के प्रमुखों से बना है।
- **मंत्रिस्तरीय बैठक** - बिम्सटेक का दूसरा शीर्ष नीति-निर्माण मंच जिसमें सदस्य राज्यों के विदेश मंत्रियों ने भाग लिया।
- **वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक** - सदस्य राज्यों के विदेश मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रतिनिधित्व।
- **बिम्सटेक वर्किंग ग्रुप** - ढाका में बिम्सटेक सचिवालय में मासिक आधार पर बांग्लादेश में बिम्सटेक सदस्य देशों के राजदूतों या उनके प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- **व्यापार मंच और आर्थिक मंच** - निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए दो महत्वपूर्ण मंच।

बिम्सटेक मुक्त व्यापार क्षेत्र ढांचा समझौता

- बिम्सटेक मुक्त व्यापार क्षेत्र फ्रेमवर्क समझौते (बीएफटीएएफए) पर सभी सदस्य देशों द्वारा पार्टियों में व्यापार और निवेश को प्रोत्साहित करने और उच्च स्तर पर बिम्सटेक देशों के साथ व्यापार और निवेश करने के लिए बाहरी लोगों को आकर्षित करने के लिए हस्ताक्षर किए गए हैं।
- इसके बाद, "व्यापार वार्ता समिति" (TNC) की स्थापना की गई, जिसमें थाईलैंड स्थायी अध्यक्ष के रूप में, वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार, निवेश, आर्थिक सहयोग, व्यापार सुविधा और एलडीसी के लिए तकनीकी सहायता के क्षेत्रों में बातचीत करने के लिए था।
- सदस्य देशों के बीच व्यापार को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र में समुद्र तट के 20 समुद्री मील के भीतर तटीय नौवहन की सुविधा के लिए नई दिल्ली में । दिसंबर 2017 को बिम्सटेक तटीय नौवहन समझौते के मसौदे पर चर्चा की गई।
- गहरे समुद्र में नौवहन की तुलना में, तटीय जहाजों को कम मसौदे वाले छोटे जहाजों की आवश्यकता होती है और इसमें कम लागत शामिल होती है।
- एक बार समझौते के अनुसमर्थन के बाद चालू हो जाने के बाद, सदस्य देशों के बीच बहुत अधिक माल ढुलाई लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और तेज तटीय शिपिंग मार्गों के माध्यम से की जा सकती है।
- 7 और 8 नवंबर, 2019 को, भारत के विशाखापत्तनम में पोर्ट्स समिट का पहला बिम्सटेक कॉन्क्लेव आयोजित किया गया था।
- इस शिखर सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य समुद्री संपर्क को मजबूत करने, बंदरगाह के नेतृत्व वाली कनेक्टिविटी पहल और सदस्य देशों के बीच सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करना है।

बिम्सटेक के सिद्धांत

- संप्रभु समानता
- क्षेत्रीय अखंडता
- राजनीतिक स्वतंत्रता
- आंतरिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं
- शांतिपूर्ण सह - अस्तित्व
- पारस्परिक लाभ

कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट

कलादान मल्टीमॉडल प्रोजेक्ट - भारत और म्यांमार को जोड़ता है

- 2008 में समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। निर्माण 2010 में शुरू हुआ था। लेकिन अपर्याप्त धन और खराब योजना के कारण देरी हुई। 2019 में प्रोजेक्ट को पूरा करने का लक्ष्य है।
- यह परियोजना भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए एक वैकल्पिक पहुंच मार्ग प्रदान करेगी।
- इस परियोजना का उद्देश्य भारत के पूर्वी बंदरगाहों से म्यांमार के साथ-साथ म्यांमार के माध्यम से भारत के उत्तर-पूर्वी हिस्से में माल के शिपमेंट के लिए परिवहन का एक बहु-मोडल मोड बनाना है।
- यह कोलकाता बंदरगाह को समुद्र के रास्ते म्यांमार के सित्तवे बंदरगाह से जोड़ेगा, और फिर अंतर्देशीय जल परिवहन के माध्यम से सित्तवे बंदरगाह को म्यांमार के लैशियो से कलादान नदी के माध्यम से और फिर सड़क परिवहन द्वारा भारत में लैशियो से मिजोरम तक जोड़ेगा।
- पूरा होने पर, केएमटीटी कोलकाता से मिजोरम तक माल परिवहन के लिए मौजूदा समय में तीन-चार दिन और दूरी लगभग 950 किमी कम कर

इनमें से कुछ राज्यों में, भारत की कोई राजनयिक उपस्थिति नहीं है, और इन देशों के साथ संबंध बनाने से भारत को संयुक्त राष्ट्र या बहुपक्षीय प्रतियोगिताओं के दौरान महत्वपूर्ण वोट हासिल करने में मदद मिल सकती है।

- यह संयुक्त राष्ट्र को छोड़कर किसी भी अन्य की तुलना में देशों का एक बड़ा नेटवर्क है, जो छोटे देशों को अपनी आवाज सुनने और अपनी परियोजनाओं और चिंताओं को बताने का मौका देता है।
- भू-राजनीतिक पैमाने पर, राष्ट्रों का राष्ट्रमंडल एक शांतिपूर्ण गठबंधन की ताकत का एक प्रभावशाली प्रदर्शन बना हुआ है। साथ ही, भारत के लिए यह चीन से अलग अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझेदारी के एक मॉडल को आकार देने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।
- यह विकास सहायता, लोकतांत्रिक मूल्यों और शैक्षिक अवसरों के लिए एक महान मंच भी बना हुआ है, लेकिन इसकी प्रासंगिकता तब तक बढ़ने की संभावना नहीं है जब तक कि यह राष्ट्रमंडल नागरिकों की अगली पीढ़ी के लिए अधिक समतावादी और समावेशी रवैया नहीं अपनाती।

मालदीव फिर से राष्ट्रमंडल में शामिल हुआ

- मालदीव हाल ही में राष्ट्रमंडल में 54वें सदस्य के रूप में फिर से शामिल हो गया है, अलगाव की अपनी पहले की नीति को उलट दिया है।
- लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के कामकाज और राष्ट्रों के परिवार का हिस्सा होने के लिए लोकप्रिय समर्थन का सबूत दिखाने के बाद द्वीप राष्ट्र को फिर से शामिल किया गया था।

अध्याय – I

सांख्यिकीय विश्लेषण, आरेख और रेखांकन

Statistical Analysis, diagrams and graphs

आलेखों का उद्देश्य संख्यात्मक तथ्यों को चित्रों द्वारा निरूपण करना है, जिससे उन्हें शीघ्रता से और सुगमतापूर्वक समझा जा सके। इस प्रकार के प्रश्नों को हल करने के लिए सबसे पहले आपको

- प्रतिशत
- औसत
- अनुपात
- लाभ और हानि

इन विषयों को अच्छे से सीखना चाहिए। उपर्युक्त विषयों को सीखे बिना सांख्यिकी के प्रश्नों को हल करना लगभग असंभव है।

- अध्ययन के घंटे की योजना बनाएं और सांख्यिकी अभ्यास के लिए प्रत्येक दिन कम से कम एक समय तय करें।
- सांख्यिकी से प्रतिदिन केवल दो से तीन प्रश्न ही हल करें। शुरुआत में, आपको एक प्रश्न को हल करने में अधिक समय लग सकता है। लेकिन अगर आप लगातार अभ्यास करेंगे तो समय धीरे-धीरे कम होता चला जाएगा।
- आपको BPSC मुख्य परीक्षा में प्रति प्रश्न समय मुश्किल से 23 मिनट मिलेगा इसलिए आपका उद्देश्य प्रति प्रश्न हल करने के समय को कम करना होना चाहिए और उस समय को 25 मिनट तक सीमित रखना चाहिए। रोजाना एक ही प्रकार के प्रश्नों को हल न करें।
- मुख्य परीक्षा में पूछे गए पिछले वर्षों के सांख्यिकी प्रश्नों का अगर अवलोकन करें तो आप पायेंगे की परीक्षा में अधिकतर तीन प्रकार के प्रश्न पूछे गये हैं। ये बार डायग्राम, लाइन डायग्राम और पाई चार्ट हैं। अतः इसी प्रकार के प्रश्नों का ज्यादा से ज्यादा अभ्यास करें । यदि एक दिन आप लाइन डायग्राम का अभ्यास करते हैं, तो अगले दिन आपको बार डायग्राम का अभ्यास करना चाहिए और उससे अगले दिन पाई चार्ट का ।
- **आँकड़े/समंक (Data):** ऐसे तथ्य जो विशेष गुणों से युक्त हो, उनका संख्यात्मक रूप में प्रदर्शन

समंक कहलाता है। इसे साधारणतः दो रूपों में प्रदर्शित किया जाता है— गुणात्मक एवं संख्यात्मक।

- आँकड़ों का प्रदर्शन (Representation of Data): आँकड़ों को प्रदर्शित करने की निम्नलिखित तीन विधियाँ हैं—

(i) सारणी द्वारा प्रदर्शन (Tabulation Representation)
(ii) चित्रों द्वारा प्रदर्शन (Diagrammatic Representation)
(iii) लेखाचित्रों द्वारा प्रदर्शन (Graphic Representation)

आँकड़ों का विश्लेषण (Data Interpretation):- आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण करने के लिए संख्यात्मक विश्लेषण द्वारा तथ्यों को सूक्ष्मता प्रदान की जाती है। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न तथ्यों की तुलना सुगम हो जाती है। संकलित आँकड़े अव्यवस्थित एवं जटिल रूप में होते हैं, उन्हें प्रस्तुतीकरण से पूर्व सारणीयन द्वारा सरलता से समझा जा में सकता है और आँकड़ों को प्रस्तुत करने में सुगमता होती है।

छ विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रस्तुत करने के लिये आलेख) Graph) का सहारा लिया जाता है। ये आलेख निम्न प्रकार के होते हैं—

Tabular DI :- टेबुलर DI डेटा को represent करने के बेसिक रूपों में से एक है । टेब्युलर DI भी दो प्रकार का होता है, एक जहाँ सारा डेटा दिया जाता है **जैसे –**

Table DI

Stores	Total ball point pens sold	Ratio of ball point pens to gel pens sold
A	108	9 : 5
B	240	6 : 5
C	200	4 : 1
D	150	3 : 1
E	120	3 : 2

Missing Table DI :- Missing Table DI वह होता है जहाँ कुछ डेटा गायब होता है और missing data को स्टूडेंट्स को find करना होता है. **जैसे –**

Person Days	A	B	C	D	E
सोमवार	420	440	240	-	280
मंगलवार	360	-	520	210	410
बुधवार	280	240	410	425	-
गुरुवार	540	510	-	630	160
शुक्रवार	-	460	350	510	400

Bar Graph (दण्ड आरेख) :-

यह भी डेटा विश्लेषण का एक तरीका है. इसमें डेटा को दर्शाने के लिए विभिन्न आकार की पट्टियों(bars) का उपयोग किया जाता है. **बार ग्राफ पर प्रत्येक बार या कोई अन्य पैटर्न विभिन्न प्रकार के डाटा की मात्रा को represent करता है.** आप नीचे दिए गए उदाहरण से बार ग्राफ़ डेटा विश्लेषण का अभ्यास कर सकते हैं

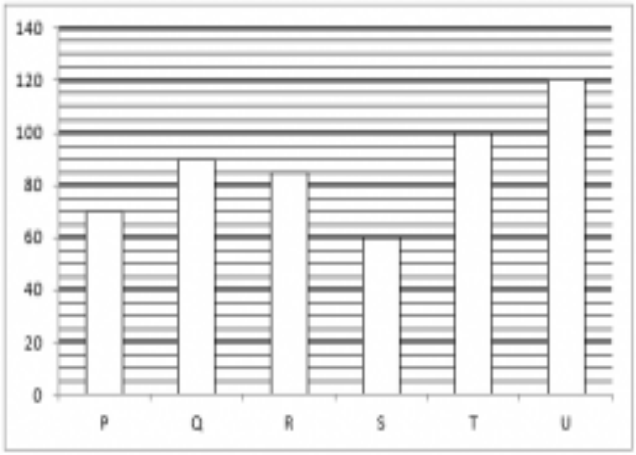

1. यदि स्कूल P में फेल होने वाले बच्चों का प्रतिशत 65% है, तो स्कूल P से फेल होने वाले स्टूडेंट्स की संख्या, स्कूल T से उत्तीर्ण छात्र की संख्या का कितना प्रतिशत है.
2. यदि सभी स्कूल के कुल पास और फेल होने वाले छात्रों के बीच का अनुपात 7: 3 है, तो सभी स्कूलों से फेल होने वाले स्टूडेंट्स की कुल संख्या ज्ञात करें।
3. स्कूल P, Q, U और T से उत्तीर्ण सभी छात्र, स्कूल R और S की तुलना में कितना अधिक है.

Days	Male : Female
Friday	2 : 3
Saturday	5 : 7
Sunday	: 4

Q1. पुरुषों की तुलना में सोमवार को राष्ट्रीय उद्यान में आने वाले पुरुषों की संख्या में पुरुषों की संख्या में 20% की वृद्धि हुई है और शुक्रवार को पार्क का दौरा करने वाली महिलाओं की तुलना में सोमवार को राष्ट्रीय उद्यान का दौरा करने वाले वाली महिलाएं अधिक हैं, तो सोमवार को राष्ट्रीय उद्यान का दौरा करने वाले कुल व्यक्तियों का पता खतरनाक।

Q2.रविवार और शनिवार को नेशनल पार्क का दौरा करने वाली कुल महिलाएं शुक्रवार और रविवार को नेशनल पार्क में आने वाले कुल पुरुषों की तुलना में प्रतिशत कम या ज्यादा हैं।

Airthmetic DI

नाव और धारा (Boat and stream)

लाइन ग्राफ पानी में 4 अलग-अलग नावों की गति((किमी / घंटा) का प्रतिनिधित्व करता है और हर नाव के लिए धारा की गति 8 किमी / घंटा है.

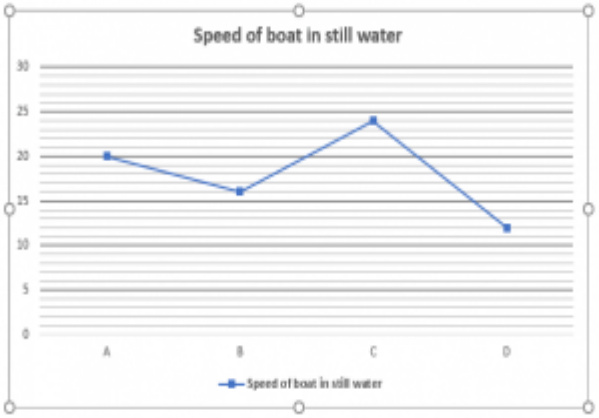

Q1. नाव A को 168 किमी बहाव की दिशा में और 48 किमी बहाव के विपरीत चलने में कुल कितना समय लगेगा?

Q2। धारा की दिशा में नाव B की गति नाव C और D की कुल गति का प्रतिशत है?

(Directions 1-5): नीचे दिया गया रेखा ग्राफ़ अलग अलग हफ्ते के दिनों में A की धारा के प्रतिकूल और धारा के अनुकूल गति को दर्शाता है ।

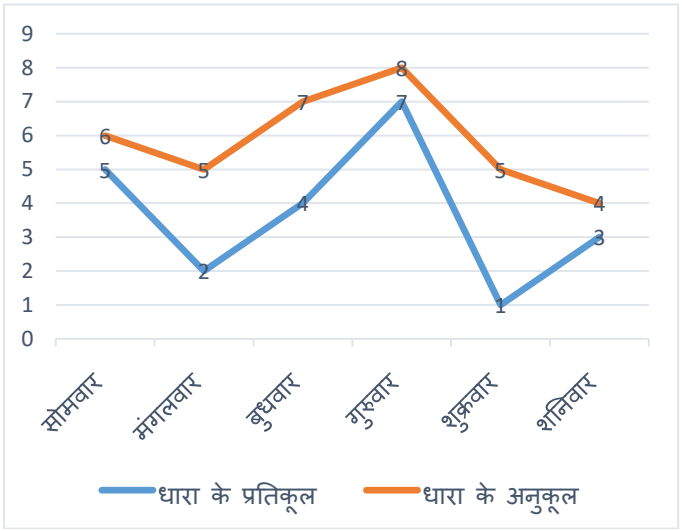

Q1. रविवार को, A शनिवार को अपनी गति से 15% अधिक गति से तैरता है। शुक्रवार की तुलना में नदी की गति 10% कम हो जाती है। यदि A धारा के अनुकूल और प्रतिकूल समान दूरी तय करता है, तो रविवार के दौरान उसकी कुल यात्रा की औसत गति क्या है?

(a) 3.22 किमीघंटा /
(b) 3.51 किमीघंटा /
(c) 1.82 किमी घंटा /
(d) 5.62 किमीघंटा /
(e) इनमे से कोई नहीं

Ans.(a) शनिवार को Aकी गति $= \frac{1}{2}$ (अनुकूल गति + प्रतिकूल गति)

$= \frac{1}{2}(4 + 3) = \frac{7}{2} = 3.5$ km/h

रविवार को की गति A $= \frac{115}{100} \times 3.5 = 4.025$

शुक्रवार को नदी की गति $= \frac{1}{2}$(अनुकूल गति - प्रतिकूल गति)

$= \frac{1}{2}(5 - 1) = \frac{4}{2} = 2$ km/hr

रविवार को नदी की गति $= \frac{90}{100} \times 2 = 1.8$ km/hr

मान लेते हैं की की गति और धारा की गति Ax और हैं y

पूरी यात्रा के दौरान ओसत गति = $\frac{(x-y)(x+y)}{x}$ km/hr

$= \frac{(4.025-1.8)(4.025+1.8)}{4.025}$

$= \frac{(2.225)(5.825)}{4.025} = 3.22$ km/hr

Q2. यदि A बुधवार को एक निश्चित दूरी तक यात्रा करता है और प्रारम्भिक बिंदु पर वापस जाने में 9 घंटे का अधिक समय लेता है। स्थान तक की दुरी कितनी हैं?

(a) 80 km

(b) 72 km

(c) 84 km

(d) 93 km

(e) None of these

Ans.(c) मान लेते हैं की की गति और धारा A की गतिx और हैं y

$x = \frac{1}{2}$ (अनुकूल गति + प्रतिकूल गति)

$x = \frac{1}{2}(7+4) = \frac{11}{2} = 5.5$ km/hr

$y = \frac{1}{2}$(अनुकूल गति - प्रतिकूल गति)

$= \frac{1}{2}(7-4) = \frac{1}{2}(3) = 1.5$ km/hr

Now distance = $\frac{(x2-y2)t}{2y}$=

लिया= t गया समय = 9h

$= \frac{\{(5.5)2-(1.5)2\}9}{2\times(1.5)} = \frac{\{30.25-2.25\}9}{3} = 84$ km

Q3. A गुरुवार को एक निश्चित स्थान तक यात्रा करता है और कुल 222/9 घंटों में प्रारम्भिक बिंदु पर वापस लौटता है। प्रारम्भिक बिंदु से स्थान तक की दुरी कितनी हैं?

(a) 48.25 किमी

(b) 98.99 किमी

(c) 22.29 किमी

(d) 82.95 किमी

(e) इनमे से कोई नहीं

Ans.(d) मान लेते हैं की की गति और धारा A की गतिx और हैं y

$x = \frac{1}{2}$ (अनुकूल गति + प्रतिकूल गति)

$\frac{1}{2}(8+7) = \frac{15}{2} = 7.5$ km/h

$y = \frac{1}{2}$(अनुकूल गति - प्रतिकूल गति) $= \frac{1}{2}(8-7) = \frac{1}{2} = 0.5$ km/hr

∴ दुरी $= \frac{(x2-y2)t}{2x}$=

$t = 22\frac{2}{9}$

$\frac{22\frac{2}{9}[(7.5)2-(0.5)2]}{2\times7.5} = \frac{22.22[56.25-0.25]}{15} = 82.95$ km

Q4. सोमवार को कुछ जलवायु परिवर्तन होने के कारण, धारा के अनुकूल गति पिछले सोमवार को धारा के अनुकूल गति की $2\frac{1}{3}$ गुनी हैं, जबदक धारा के प्रतिकूल गति 20% कम हो जाती हैं, यदि वह समान दूरी को धारा के अनुकूल और प्रतिकूल तय करता हैं तो A की औसत गति कितनी हैं?

(a) 4.66किमी घंटा /

(b) 5.22किमी घंटा /

(c) 6.22किमी घंटा /

(d) 7.66किमी घंटा /

(e) इनमे से कोई नहीं

Ans.(c) सोमवार को मूल अनुकूल गति = 60 km/hr

परिवर्तित अनुकूल गति $= \frac{7}{3} \times 60$ km/hr = 14 km/hr

Q6. मंगलवार से शनिवार तक रिटर्न किए गए ऑर्डरों की कुल संख्या ज्ञात कीजिए ?
(a) 61
(b) 57
(c) 55
(d) 59
(e) 63

ans (1-5) मान ले सप्ताह 2 के रविवार को प्राप्त हुए कुल ऑर्डर =100%
तो यह स्पष्ट रूप से सप्ताह दो रविवार के साथ शुरू हुआ है
दिया गया है , शेष ऑर्डर जो सप्ताह II के इन छह दिनों में वितरित नहीं किये गए, वे 25 हैं
अत; 100% - (16% + 12% + 24% + 20% + 8% + 15%) = 25
5% = 25%अत; 100% = 500

Q.1 ans(a): अभीष्ट योग =60 + 6 = 66

Q.2.ans (d): अभीष्ट प्रतिशत= $\frac{6-4}{6} \times 100 = 33\frac{1}{3}$ %

Q.3.ans (c): जब हम रिटर्न आर्डर को बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कर रहे हैं, तो यह 4, 5, 6, 18 और 24. होगा तो अभीष्ट औसत = $\frac{5+6+18}{3} = \frac{29}{3}$

Q.4.ans (a): जब हम शुक्रवार और गुरुवार को डिलीवर किए गए ऑर्डर को परस्पर बदल देते हैं गुरुवार को दिए गए कुल ऑर्डर =40
और शुक्रवार को डिलीवर किए गए कुल ऑर्डर = 100
अभीष्ट अंतर =$100 \times \frac{10}{100} - 40 \times \frac{5}{100} = 10 - 2 = 8$

Q.5.ans (e): अभीष्ट अनुपात) = 24 + 18) : 75 = 42 : 75 = 14 : 25

Q.6.ans (b): आवश्यक योग) =24 + 6 +18 + 5 + 4) = 57

Caselete DI

निर्देश) -5 (आँकडों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

एक स्कूल एक प्रतियोगिता आयोजित करता है जिसमें दो पेपर लिखित और प्रायोगिक होते हैं। लिखित पेपर के अधिकतम अंक 80 और प्रायोगिक पेपर के अधिकतम अंक 60 हैं।

नोटः (i) परीक्षा में कुल अधिकतम अंक =लिखित पेपर के अधिकतम अंक + प्रायोगिक पेपर के अधिकतम अंक

(ii) कुल अधिकतम वेटेज स्कोर =वेटेज प्रतिशत × लिखित पेपर के अधिकतम अंक +वेटेज प्रतिशत × प्रायोगिक पेपर के अधिकतम अंक
(iii)कुल प्राप्त वेटेज स्कोर =वेटेज प्रतिशत × लिखित पेपर के प्राप्त अंक + वेटेज प्रतिशत × प्रायोगिक पेपर के प्राप्त अंक
(iv) लिखित परीक्षा का वेटेज 60% है और प्रायोगिक परीक्षा का वेटेज प्रतिशत 40% है।

A ने परीक्षा में 52 वेटेज स्कोर प्राप्त किया । B ने परीक्षा में 52 वेटेज स्कोर प्राप्त किया और उसी प्रायोगिक पेपर में 55 अंक प्राप्त किए । C ने प्रेक्टिकल पेपर में 50 अंक प्राप्त किए । D ने लिखित पेपर में 70 अंक प्राप्त किए और उसी प्रायोगिक पेपर में 75% प्राप्त किए ।

Q1. यदि C ने परीक्षा में 65 वेटेज स्कोर प्राप्त किया , तो C द्वारा लिखित पेपर में प्राप्त अंकों का B से अनुपात ज्ञात कीजिए ?
(a) 2 : 3
(b) 3 : 2
(c) 2 : 1
(d) 3 : 1
(e) इनमें से कोई नहीं

Q2. यदि D ने लिखित पेपर में7 $\frac{1}{7}$ % अधिक अंक प्राप्त किए और C ने लिखित पेपर में60 अंक प्राप्त किए , तो C और D के वेटेज स्कोरों के बीच का अंतर, अधिकतम वेटेज स्कोर का कितना प्रतिशत (अनुमानितहै (?
(a) 12%
(b) 8%
(c) 10%
(d) 15%

(e) 5%

Q3. यदि A ने लिखित पेपर में B से 12% अधिक अंक प्राप्त किए , तो A द्वारा प्रायोगिक पेपर में प्राप्त किए गए अंक ज्ञात कीजिए ?

(a) 46
(b) 48
(c) 42
(d) 36
(e) 40

ANS. (1-5)

(iv) से हमें कुल अधिकतम वेटेज स्कोर मिलते हैं= $\frac{60}{100} \times 80 + \frac{40}{100} \times 60 = 48 + 24 = 72$ B के लिए ,
माना B को लिखित पेपर में प्राप्त अंक 'x' हैं
इसलिए , $52 = \frac{60}{100} \times x + \frac{40}{100} \times 55$

$x = 50$

D के लिए ,

D द्वारा प्राप्त कुल वेटेज स्कोर = $\frac{60}{100} \times 70 + \frac{75}{100} \times 60 \times \frac{40}{100} = 42 + 18 = 60$

Q1ans(b): माना C को लिखित पेपर में प्राप्त अंक 'x' हैं
इसलिए, $65 = \times x + \times 50$
$x = 75$
अभीष्ट अनुपात $= 75 : 50 = 3 : 2$

Q2 ans (c): लिखित पेपर में D द्वारा प्राप्त नए प्राप्त अंक $=70 \times \frac{15}{14} = 75$

तो, C ने वेटेज स्कोर प्राप्त किये $= \frac{60}{100} \times 60 + \frac{40}{100} \times 50 = 56$

D ने वेटेज स्कोर प्राप्त किये $= \frac{60}{100} \times 75 + \frac{40}{100} \times 45 = 63$

अभीष्ट प्रतिशत= $\frac{63-56}{72} \times 100 = \frac{7}{72} \times 100 = 9.72 \approx 10\%$

Q3 ans (a): लिखित पेपर में A के कुल स्कोर $= 50 \times \frac{112}{100} = 56$

माना A ने प्रायोगिक पेपर में 'n' अंक प्राप्त किए हैं

इसलिए, $52 = \frac{60}{100} \times 56 + \frac{40}{100} \times n$

$0.4n = 18.4$

$n = 46$

Exercise

Q.1 वर्ष 1998 में भारत के विभिन्न राज्यों की जनसंख्या सम्बन्धित वृत्त सारणी और लिंग एवं शिक्षा के संदर्भ में जनसंख्या अनुपाती सारणी नीचे दी गयी है। इनका अध्ययन ध्यान से कीजिए और उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(BPSC-2021)

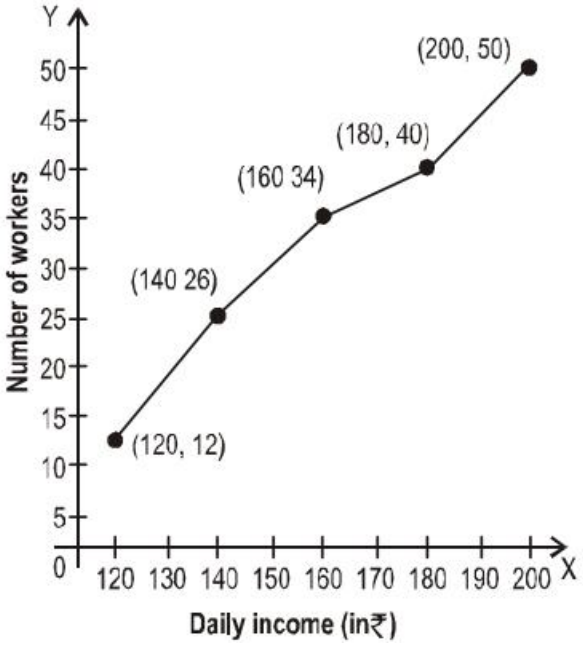

Q : 150 और 180 के बीच कारखाने के श्रमिकों का कितना प्रतिशत कमाते हैं?
Ans. 16 %

Q : कारखाने में औसत मजदूरी कितनी है ?

Solution- औसत मजदूरी = 120+130+140+150+160+170+180+190+200/9
= 1440/9
=160

Q निम्नलिखित बार-ग्राफ का अध्ययन करें और नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर दें

एक कंपनी द्वारा (10000 टन में) C का उत्पादन वर्षों में।

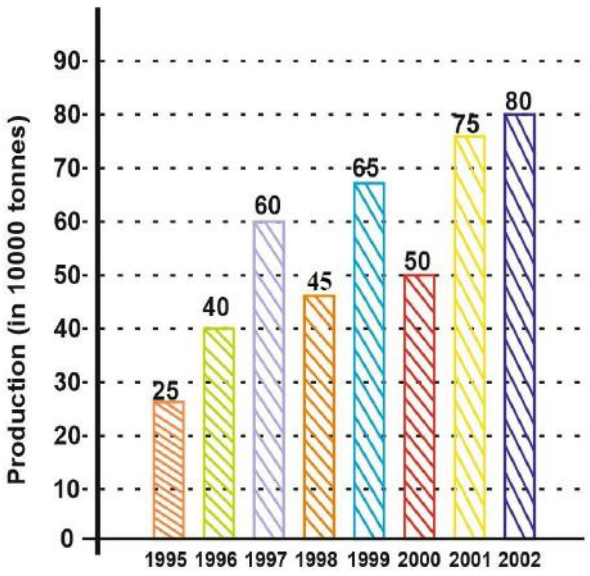

Q. दिए गए वर्षों में से कितने में उर्वरकों का उत्पादन दिए गए वर्षों के औसत उत्पादन से अधिक था?
(A) 1
(B) 2
(C) 3
(D) 4
(E) 5
Ans . D

Sol. औसत उत्पादन
=25+40+60+45+65+50+75+80/8 = 55 tones

औसत उत्पादन से अधिक =4 उर्वरक

Q. 1996 और 1997 का औसत उत्पादन निम्न में से किस वर्ष के औसत उत्पादन के बराबर था?
(A) 2000 and 2001
(B) 1999 and 2000
(C) 1998 and 2000
(D) 1995 and 1999
(E) 1995 and 2001
Ans . E

Sol.- **1996 और 1997 का औसत उत्पादन** = 40+60/2= 50tones

2000 and 2001 का औसत – 50+75/2=125/2=62.5
1999 and 2000 -65+50/2= 57.5
1998 and 2000 – 45+50/2 = 47.5
1995 and 1999 – 25+65/2 = 45
1995 and 2001 – 25+75/2 = 50
then Ans- E

Q. 1997 से 1998 तक उर्वरकों के उत्पादन में प्रतिशत गिरावट क्या थी?
(A) 33%
(B) 30%
(C) 25%
(D) 21%
(E)20%
Ans . C
Sol. - 1997 में उत्पादन = 60tone
1998 में उत्पादन = 45tone
प्रतिशत गिरावट =60-45/60*100 = 15/60*100 =25%

Q. पिछले वर्ष की तुलना में किस वर्ष उत्पादन में प्रतिशत वृद्धि अधिकतम रही?
(A) 2002
(B) 2001
(C) 1999
(D) 1997
(E)1996
Ans . E
Sol.- 1995-1996 **में**=40-25/25*100 =15/25*100 = 60%
1996-1997 -60-40/40*100 = 20/40*100=50%
1998-1999 – 65-45/45*100= 20/45*100= 44.5%
2000-2001 – 75-50/50*100 = 50%
2001-2002- 80-75/75*100 =6.6%

अधिकतम वृद्धि = 1996 **में=60%**

Q. 1995 की तुलना में 2002 में उर्वरकों के उत्पादन में प्रतिशत वृद्धि कितनी थी?
(A) 320%
(B) 300%
(C) 220%
(D) 200%
(E) 150%
Ans . C
Sol. - 1995 **में** =25tones
2002 **में** = 80tones
प्रतिशत वृद्धि = 80-25/25*100 =55/25*100 =55*4 =220%

Q निम्नलिखित लाइन-ग्राफ 1995-2000 की अवधि के दौरान किसी कंपनी द्वारा अर्जित वार्षिक प्रतिशत लाभ देता है। लाइन ग्राफ का अध्ययन करें और उस प्रश्न का उत्तर दें जो उस पर आधारित है

वर्षों से एक कंपनी द्वारा अर्जित लाभ- $33\frac{1}{3}\%$.

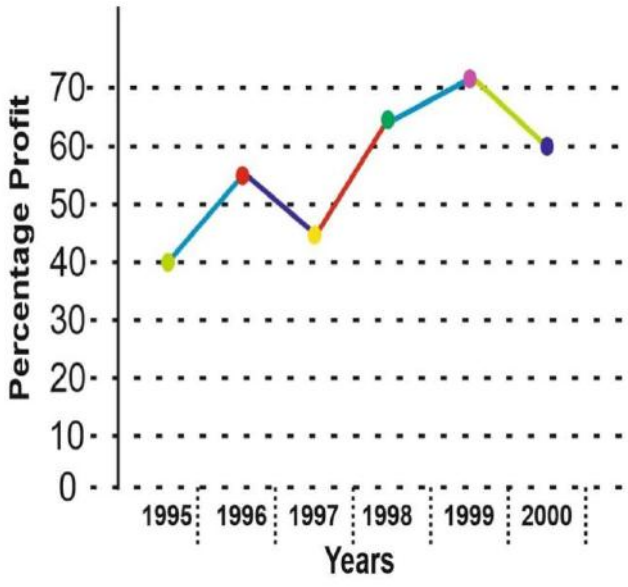

Q.a. अगर 1998 में आय 264 करोड़, 1998 में खर्च क्या था?
(A) 104 करोड़
(B) 145 करोड़ रु
(C) 160 करोड़
(D) 185 करोड़
(E) इनमें से कोई नहीं

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/wdvcfu

Online order - https://bit.ly/40yVhHP

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE